



ऋग्वेद मन्त्र (१.२.२) - वायु स्तुति एवं विज्ञान

वायं उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छां जरितारः ।
सुतसोमा अहर्विदः ॥२

मूल मन्त्र एवं पदपाठ

संहिता पाठः वायं उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छां जरितारः । सुतसोमा अहर्विदः ॥२

पदपाठः वायो इति । उक्थेभिः । जरन्ते । त्वाम् । अच्छं । जरितारः । सुतऽसोमाः । अहःऽविदः ॥

abc शब्दार्थ (Word Meaning)

- **वायो (Vayo):** हे वायुदेव! / हे अनन्त बलशाली परमेश्वर! / हे गमनशील पवन!
- **उक्थेभिः (Ukthebhih):** स्तोत्रों द्वारा / आज्य-प्रउग आदि शस्त्रों (मन्त्रों) द्वारा।
- **जरन्ते (Jarante):** स्तुति करते हैं / प्रशंसा करते हैं / गुणों का गान करते हैं।
- **त्वाम् (Twam):** आपको।
- **अच्छ (Achha):** साक्षात् / सम्मुख / लक्ष्य करके।
- **जरितारः (Jaritarah):** स्तुति करने वाले (स्तोता) / यज्ञ करने वाले ऋत्विज / अर्चक / विद्वान्।
- **सुतसोमाः (Sutasomah):** जिन्होंने सोम रस निचोड़ लिया है (याज्ञिक) / जिन्होंने विद्या प्राप्ति के लिए औषधियों और रसों का निर्माण (उत्पादन) किया है (वैज्ञानिक)।
- **अहर्विदः (Aharvidah):** 'अहः' (अग्निष्टोम आदि यज्ञों) को जानने वाले / जो विज्ञान रूपी प्रकाश (अहर्विज्ञान) को प्राप्त करते हैं।



मन्त्रार्थ (Translations)

१. आचार्य सायण के अनुसार (याज्ञिक अर्थ)

हे वायुदेव! जिन ऋत्विजों (यजमानों) ने आपके लिए सोम रस निचोड़ कर तैयार कर लिया है और जो 'अहः' (एक दिन में पूर्ण होने वाले अग्निष्टोम आदि यज्ञों) के वैदिक विधान को भली-भांति जानने वाले हैं, वे स्तोतागण आज्य और प्रउग आदि शस्त्रों (मन्त्रों) द्वारा साक्षात् आपकी ही स्तुति करते हैं।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार (आध्यात्मिक अर्थ)

हे अनन्त बलशाली परमेश्वर! विज्ञान के प्रकाश को जानने वाले तथा विद्या के लिए ओषधि-रसों को उत्पन्न करने वाले विद्वान लोग उत्तम स्तोत्रों द्वारा साक्षात् आपकी ही स्तुति (उपासना) करते हैं।



वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र में 'वायु' (Physical Wind/Air) के भौतिक गुणों और 'विमान विद्या' (Aeronautics) का अद्भुत संकेत दिया है।

- विमान और शिल्प विद्या:** उन्होंने लिखा है— "वायो गमनशीलो विमानादिशिल्पविद्यानिमित्तः पवनः"। अर्थात् वायु गमनशील है और विमान आदि यान्त्रिक (Aeronautical and Mechanical) शिल्प विद्या का मुख्य कारण है।
- वैज्ञानिक अनुसंधान:** जो विद्वान (अहर्विदः - विज्ञान के प्रकाश को जानने वाले) औषधियों, रसों और ईंधनों (सुतसोमाः) का शोध करते हैं, वे वायु के गुणों (Aerodynamics) का अध्ययन और प्रशंसा (जरितारः) करते हैं। वायु के इन गुणों को जानकर और उनका उपयोग करके वे सम्पूर्ण मानव जाति का उपकार करते हैं।



व्याकरणिक व्युत्पत्ति (Grammar Derivation)

- जरन्ते / जरितारः:** यह 'जृ' (स्तुति करना) धातु से बना है। निरुक्त (१०.८) और निघण्टु (३.१४) के अनुसार "जरत इत्यर्चतिकर्मा" अर्थात् यह अर्चना/स्तुति के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
- त्वामच्छा (त्वाम् + अच्छ):** पाणिनी अष्टाध्यायी के सूत्र "निपातस्य च" (६.३.१३५/१३६) के नियम से संहिता पाठ में 'अच्छ' निपात के अन्तिम अकार को दीर्घ (आ) हो गया है, जिससे 'त्वामच्छा' बना है।
- उक्थेभिः:** यहाँ तृतीया बहुवचन में वेद के नियम "बहुलं छन्दसि" के कारण 'भिस' के स्थान पर 'ऐस्' आदेश नहीं हुआ, इसलिए 'उक्थेः' के स्थान पर वैदिक रूप 'उक्थेभिः' बना है।
- सुतसोमाः:** यह बहुव्रीहि समास है। अष्टाध्यायी सूत्र (६.२.१) "बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्" के अनुसार इसमें पूर्वपद (सुत) का स्वर प्रकृति भाव में रहता है।

- **अहर्विदः**: इसमें समास स्वर (६.१.२२३) को बाधित कर के, "गतिकारकोपपदात् कृत्" (६.२.१३९) सूत्र से कृदन्त उत्तरपद प्रकृति स्वर होता है।



मन्त्र विनियोग (Mantra Viniyoga)

वैदिक कर्मकाण्ड और श्रौतसूत्रों के अनुसार, इस मन्त्र का विनियोग 'अग्निष्टोम' आदि सोमयागों में होता है। आचार्य सायण के भाष्य ("अहःशब्द एकेनाह्ना निष्पाद्येऽग्निष्टोमादिक्रतौ...") के अनुसार, जब यज्ञ में वायु देवता के निमित्त 'प्रउग शस्त्र' (विशिष्ट मन्त्र समूह) का पाठ किया जाता है, तब ऋत्विजों द्वारा सोम रस अर्पित करते समय इस मन्त्र का गान (जप/स्तुति) किया जाता है।

Presented for

Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

Acharya Kapil

Contact No: 8756390767